प्रकृति में यात्राएँ | सेंटर फ़ॉर लर्निंग स्कूल

कीर्ति मुकुन्दा

"अगर एक बच्चे को कुतूहल की अपनी जन्मजात भावना को जीवित रखना है... तो उसे कम-से-कम एक वयस्क के साथ की ज़रूरत है जो इसे साझा कर सके, उसके साथ उस दुनिया के आनन्द, उत्साह और रहस्य को फिर से खोज सके जिसमें हम रहते हैं।" (रेचल कार्सन) — यह वह उद्धरण है जिसने हमें सेंटर फ़ॉर लर्निंग स्कूल में प्रेरित किया है, जो बेंगलूरु के बाहर 25 एकड़ के परिसर में स्थित है।

कुछ वर्षों तक हमने अपने समृद्ध स्थान को जानने पर ध्यान केन्द्रित किया। ऐसा हमने जूनियर स्कूली बच्चों के साथ 'प्रकृति यात्रा' गतिविधियों और परियोजनाओं के माध्यम से किया। वास्तव में, एक सुबह एक 7 वर्षीय बच्चे ने यह शब्द गढ़ा, "आंटी, क्यों न हम इसे 'नेचर जर्नी' (प्रकृति यात्रा) कहें?" इसमें परिसर की सैर, भूमि सम्बन्धी काम, संवेदी गतिविधियाँ और खेल शामिल थे, जिनसे बच्चों का ध्यान हमारे प्राकृतिक वातावरण की ओर आकर्षित हो। इन 6 से 9 साल के बच्चों के शिक्षकों के रूप में हम उनके साथ चले, हमने 'नेचर जर्नल' लिखे और योजना बनाई कि हम क्या और कैसे पेश करेंगे और फिर वास्तव में जो हुआ उसे रिकॉर्ड किया। हमारा मुख्य उद्देश्य कौशल विकसित करना था, जैसे ख़ामोशी से अवलोकन और सुनना। कविता, गणित, शिल्प, कलाकृति बनाना, स्कैचिंग और शोध प्रक्रियाओं के पहलू भी उनकी कक्षाओं में शामिल हुए।

प्रकृति में सैर की योजना

विषय : पेड़, पौधे, फूल, फल, बीज और वृद्धि के चक्र; कीट और पशु व्यवहार और जीवन चक्र; पक्षी और उनकी विशेषताएँ, परिसर और उसकी विशेषताएँ और पगडण्डियाँ (trails)।

गतिविधियाँ : खेल/ खोजें, अवलोकन और स्कैचिंग, कला और शिल्प, कविताएँ और जर्नल लेखन, विस्तृत विवरण लिखना, बाग़वानी, मापन।

चित्त की आदतें : अवलोकन करना लेकिन हस्तक्षेप नहीं करना, जिज्ञासु होना और प्रश्न करना न कि केवल पहचानना और नामों को जानना, सराहना करना और निर्णायक राय न बनाना।

बच्चों को उनकी आयु के आधार पर तीन समूहों में विभाजित किया गया था : जुगनू (Fireflies), तितलियाँ (Butterflies) और व्याधपतंगे (Dragonflies)। परिसर की सैर कैसे की गई, इसका विवरण एक ऋतु के अन्त में एक शिक्षक द्वारा रखी गई 'प्रकृति डायरी' के रूप में यहाँ प्रस्तुत है।

चित्र-1 : घास के बीच से होकर गुज़रती एक पगडण्डी।

शाम की सैर — जून से सितम्बर

शामों की सैर के दौरान, हमने परिसर में पगडण्डियों (campus trails) का पता लगाया और अपने स्वयं के समृद्ध प्राकृतिक इलाक़े की विशेषताओं को जाना। बच्चों ने वन्य जीवों का अवलोकन किया, परिसर के नक़्शों का उपयोग हमारी सैर के रास्तों का पता लगाने के लिए किया और समय के साथ व मौसमों के दौरान होने वाले परिवर्तनों को देखा। कभी-कभी बच्चे बारी-बारी से सैर का नेतृत्व करते थे।

15 जून : बच्चों ने देखा कि चींटियाँ एक सड़ते हुए कनखजूरे (centipede) को ले जा रही हैं, रास्ते में गाय का गोबर मिला, ज़मीन के क़रीब उगता एक बहुत रंगीन पत्ता देखा और यह महसूस किया कि जंगल के एक घने हिस्से से बाहर निकलने पर सूरज कैसा लगता है। जब हम कुछ मिनट ख़ामोश बैठे रहे, तो उन्होंने देखा कि एक बड़ी तितली क़रीब आ रही है; उन्होंने और अधिक चिड़ियों की और सरसराहट की आवाज़ें सुनीं। उन्होंने सैर को इस सवाल के साथ समाप्त किया : कनखजूरा कैसे मरा? (इस सैर के कुछ सप्ताह बाद, वे सड़ते हुए कनखजूरे को देखना चाहते थे और उन्होंने देखा कि कैसे उसके छल्ले ग़ायब हो रहे थे)।

22 जून : शाम की सैर पर, सब्ज़ी के बग़ीचे से गुज़रते हुए हम सभी ने एक हरे रंग की चिड़िया को अपनी नारंगी रंग की चोंच से कमल कैक्टस (agave) के एक बहुत बड़े फूल की दावत उड़ाते देखा, जो कमल कैक्टस के पौधे से बाहर निकला हुआ था। यह एक तोता (parakeet) था और हम सभी ने देखा कि यह फूल को कितनी बेतरतीबी से खा रहा था। हमने अपना चलना जारी रखा और आधे घण्टे के बाद जब हम उसी रास्ते से लौटते हुए और कमल कैक्टस के फूल के पास से गुज़रे तो तोते को वहीं पाया!

उसी सैर में हमने देखा कि सीढ़ियों पर पड़ा कनखजूरा और सड़ गया था। हमें एक गुबरैले (beetle) का बाहरी कंकाल/खोल (exoskeleton) भी मिला और कुछ बच्चे इसके लिए एक 'क़ब्र' खोदकर इसे दफ़नाना चाहते थे। सैर के अन्त में, हम सब्ज़ी के बग़ीचे के निकट एक अनार के पेड़ के पास रुके और उसके फल के सभी चरणों को देखा : कोंपल, फूल और फल। थोड़ी देर बाद, एक बच्चा जानना चाहता था कि लैंटाना (lantana) के फल कैसे दिखते हैं, तो हमने उसकी बेरियाँ देखीं और उन्हें चखा।

29 जून : जब हम अपनी शाम की सैर पर निकले, तो हमने उस कोकून की जाँच की जो व्याधपतंगा समूह द्वारा हमारे ध्यान में लाया गया था। वह एक झोंपड़ी के दरवाज़े के पास एक पतली शाख़ से लटक रहा था। बच्चों ने देखा कि यह कितना चमकदार और नाज़ुक दिखता है। जैसे ही हम सब्ज़ी के बग़ीचे से होकर जाती उसी पगडण्डी पर आगे बढ़े, तो हमने उस रास्ते पर पहले जो देखा था उसकी यादें बच्चों के ज़ेहन में लौट आईं। कनखजूरा, तोता, एक बच्चे ने बहुत छोटी-छोटी चीज़ों पर ध्यान देना शुरू कर दिया, जैसे पत्तियों पर कुतरने के निशान और वह यह जानने को भी उत्सुक था कि फूल से लैंटाना का फल कैसे आया। यह फूलों में से फलों के निकलने के तथ्य को लेकर की गई हमारी जाँच के सिलसिले का सवाल था। हमने परिसर के नक़्शे को देखकर पहचाना कि हम मानचित्र पर कहाँ थे। कुछ बच्चे मानचित्र पर दिख रही इमारतों को स्थल–चिह्नों के रूप में उपयोग करके ऐसा कर पाए। हमें एहसास हुआ कि हम उत्तर की ओर जाने वाली पगडण्डी पर हैं।

जैसे ही हम पेड़ों से भरे और छायादार अभ्यारण्य में पहुँचे, तो हमने इस बारे में बात की कि इस अलग जगह में आकर कैसा लग रहा है। बच्चों ने कहा : "नींद, थकान और ठण्डक और इसने उन्हें छात्रावास की याद दिला दी!" हम प्रकृति में सैर की उस पगडण्डी (nature trail) का अनुसरण करते हुए चक्कर लगाकर गेस्ट हाउस लौटे और उसकी बालकनी में आ गए। वहाँ से हमने कई व्याधपतंगों को बालकनी की ईंटों के किनारों पर आराम करते हुए देखा। मैंने पाया कि मुझमें बच्चों से लगातार यह सवाल पूछने की प्रबल इच्छा रहती थी : जो हो रहा है वो उस तरह से क्यों हो रहा है जैसा कि हम उसे होता पाते हैं? फ़ौरन ही कुछ सही उत्तर देने के प्रयास किए जाते हैं। मैंने अपनी सहज प्रवृत्ति को ही धीमा करना चाहा ताकि बच्चों को प्रभावित न करूँ या उन्हें उत्तरों की ओर निर्देशित न करूँ, बल्कि यह देख पाऊँ कि वे ख़ुद अपने अवलोकनों से क्या पाते हैं। कभी ठहर जाना भी ज़रूरी होता है!

मैंने यह भी दबाव महसूस करना शुरू कर दिया कि मैं जो कुछ देख या सुन रही थी, उसके बारे में बच्चों का ध्यान आकर्षित करूँ, लेकिन समय के साथ मैंने पाया कि वैसे भी उनकी ओर से बहुत कुछ आ ही रहा था और किसी तय एजेण्डा के बिना इन स्थानों और रास्तों से होकर गुज़रना भी अच्छा ही था। हम यह भी चाहते हैं कि बच्चों में इस स्थान के प्रति एहसासात विकसित हों, वे इस जगह को केवल वैज्ञानिक दृष्टि से न देखें, बल्कि उनके पास ऐसे अनुभव हों जिन्हें वे सँजो कर रखें और याद करें। इस स्तर पर मैंने जो एक बदलाव देखना शुरू किया, वह यह था कि बच्चों में फूल-पत्तियों को तोड़कर अपने लिए रख लेने की लालसा न रखने के प्रति अधिक जागरूकता आई थी। हम प्रकृति में सुन्दर लगने वाली चीज़ को क्यों अपने पास रखना चाहते हैं? हालाँकि, छोटे बच्चे अभी भी इस भावना से जूझ रहे थे।

7 जुलाई : सैर के दौरान तेज़ बारिश हुई और रेनकोट होने के बावजूद बच्चे भीग गए। उनमें से कुछ डरे हुए थे लेकिन बाक़ी इस रोमांच से उत्साहित और जोश से भरे थे। काफ़ी देर तक

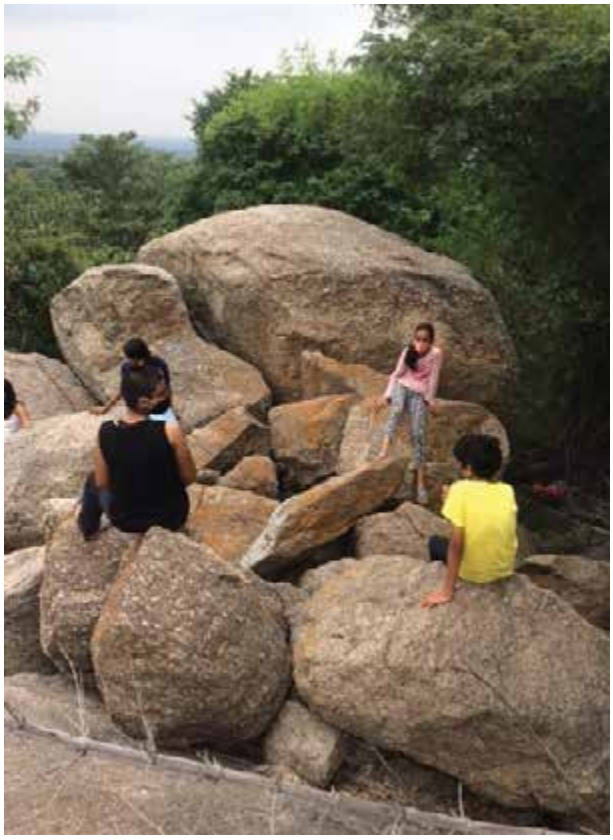

चित्र-2 : चट्टानों को समझने की कोशिश।

हमें एक पेड़ के नीचे शरण लेनी पड़ी। बच्चों ने एक सफ़ेद और नारंगी मशरूम देखा। मैंने रास्ते में एक ख़रगोश देखा। वह फ़ौरन ही ग़ायब हो गया क्योंकि हमारे परिसर में मौजूद रहने वाला कुत्ता उसकी ओर दौड़ पड़ा था।

हम सब्ज़ी के बग़ीचे से होकर वापस प्रकृति में सैर की पगडण्डी पर चल पड़े और बच्चों को फिर से तोते की जगह याद आ गई, भले ही हम दूसरी ओर जा रहे थे। उस शाम, बच्चों में उपलब्धि की भावना थी, क्योंकि उन्हें लगा कि उन्होंने भारी बारिश और तूफ़ान का सामना किया है।

26 जुलाई : हमने प्रकृति में सैर की पगडण्डी के एक दूसरे हिस्से में खोजबीन करने का फ़ैसला किया और इसकी शुरुआत हमने खेल के मैदान के पास, अपनी खड़ी चट्टान के ऊपर से और लाइब्रेरी व असेम्बली हॉल के पीछे से की। अचानक ही इस पगडण्डी के छायादार हिस्सों में कई तितलियाँ नज़र आईं और हमने तितली के एक पंख को एक जाले में फँसा हुआ भी देखा। बच्चों ने असेम्बली हॉल के पीछे घास में बहुत से टिड्डे (grasshoppers) देखे और एक सुन्दर चट्टानी ताल (rock pool) देखा, जिसकी सतह पर हरे पौधों का क़ालीन–सा बिछा था। ध्यान से देखने पर हमने उस क़ालीन पर छोटे-छोटे कीड़ों को चलते पाया। फिर से, कुछ बच्चों को दूसरों को ज़ोर देकर याद दिलाना पड़ा कि वे ताल के पानी में लकड़ी न डालें, उसमें छोटे कंकड़ न फेंकें और वहाँ चल रहे जीवन को अस्त-व्यस्त न करें। छोटे बच्चों में ऐसा करने की बहुत तीव्र प्रवृत्ति और इच्छा होती है। हम भोजन की जगह आकर थमे और परिसर के नक़्शे पर अपनी सैर के रास्ते को फिर से देखा।

3 अगस्त : कला कक्ष के पास, एक लम्बा, पत्ती–रहित पेड़ था और हमने उस पेड़ पर दो जंगली कौवे देखे। हम कुछ देर उन्हें देखते रहे और फिर असेम्बली हॉल के पास से आगे बढ़े। तितली का पंख अभी भी जाले में फँसा हुआ था। जब हम खेल के मैदान में आए तो हमने एक पीले रंग के फूलों वाला पेड़ देखा और उसके कुछ फूल लेकर लौटे ताकि बाद में हम उनकी पहचान कर सकें।

10 अगस्त : हमने चीज़ों की परवाह करने और न करने पर बात करके इस सैर की शुरुआत की। हमने बात की कि राधिका चड्ढा की कहानी 'बसवा एंड द डॉट्स ऑफ़ फ़ायर' में कैसे

चित्र-3 : जानवरों के पग–चिह्नों की पहचान करते बच्चे।

बसवा ने कीड़ों की परवाह की। मैंने उन्हें वे पन्ने दिखाए। स्टेज रॉक और लाइब्रेरी के पास से फिर से गुज़रते हुए हमने नम और सूखे दोनों हिस्से, टिड्डे, पत्तियों पर जाले, एक पतले तार पर लटकी इल्ली (caterpillar), एक ख़ास हिस्से में कई तितलियाँ और छोटे सफ़ेद मशरूम ("कवक (fungi)", बच्चे बोले) देखे। जब हम असेम्बली हॉल के पास से गुज़रे, तो बच्चों को पता चला कि हम स्कूल की बाड़ के पास से चल रहे हैं। एक बच्चे ने एक लता को देखा जिसमें से तन्तु (tendril) और छोटी-छोटी जड़ें बाहर निकली हुई थीं और उसने हमारे फलियों के पौधों और उनके तन्तुओं के बारे में सोचा। चट्टानी ताल में हमने कीड़ों को अन्दर–बाहर उछलते हुए देखा। हम एक चट्टान पर बैठ गए और मैंने उन्हें उन पक्षियों की तस्वीरें दिखाईं जिन्हें हम परिसर में देखते हैं। एक हॉस्टल के निकट, ऊँट के पैर के जैसे पत्तों वाले कचनार के पेड़ (bauhinia purpurea) के पास हमने अपनी सैर ख़त्म की। एक बच्चा उसका गुलाबी फूल मेरे पास लाया और इस तरह हम पुष्पित होते उस पेड़ को खोजने के लिए रुके। अन्त में, एक बच्चे ने एक पत्थर उठाया जिस पर काई (moss) लिपटी थी और काई के ऊपर एक छोटा डण्ठल–सा निकला हुआ था। हमने इसे शिक्षक को दिखाने का फ़ैसला किया, जिन्होंने समझाया कि यह बीजाणु–उद्भिद (sporophyte) था, युग्मकोद्भिद (gametophyte) चरण से पहले का चरण, जो फिर नर और मादा भागों और पत्तेदार काई का उत्पादन करता है।

कुछ रास्ते ऐसे थे जहाँ बच्चे बहुत ऊर्जा से भरे थे और उन्होंने बहुत कुछ देखा और कुछ ऐसे रास्ते थे जहाँ उनकी मनोदशा उतनी उत्साहपूर्ण नहीं थी और वे उन जगहों को पार तो कर गए लेकिन वे अपनी ही दुनिया में खोए थे।

और क्या किया, क्या पाया

भूमि सम्बन्धी काम

हमने खेती के चक्र का पालन किया — यानी, क्यारियाँ तैयार कीं, उनमें खाद डाली और पलवार बिछाई (mulching), सब्ज़ियों और फूलों के बीज बोए, बढ़ते पौधों को पानी दिया और उनकी देखभाल की, पकने पर कटाई की, खाने के लिए पकाया और अगली बुवाई के लिए बीजों को जमा किया। कटाई के समय हमने सब्ज़ियों की संख्या या वज़न का अनुमान लगाया और फिर उन्हें जाँचा। हमने पास के एक खेत का दौरा किया, जहाँ से स्कूल कुछ फल ख़रीदता है और वहाँ दो एकड़ से कम जगह में मौजूद विविधता और उगाए गए पेड़ों की तादाद ने हमें अचम्भित किया।

गतिविधियाँ और खेल

अपने आस-पास मौजूद पर्यावरण से जुड़े कई तरह के खेल और गतिविधियाँ [(उदाहरण के लिए, पेड़ों पर पहचान के बिल्ले लगाना (Tree Tag), पेड़ को महसूस करना (Feel a Tree), चमगादड़ व शलभ (Bat and Moth), चीज़ों को खोजबीन कर लाना (Scavenger Hunt), प्रकृति में छुपाई अप्राकृतिक वस्तुओं की पहचान (Un–nature Trail)] और बाद में, व्यापक समझ बनाना [उदाहरण के लिए, जीवन–जाल (Web of Life), जीवन का पिरामिड (Pyramid of Life), जंगल के लिए नुस्ख़ा (Recipe for a Forest)] कार्यक्रम का हिस्सा थे।

अन्य व्यावहारिक और क्रियाशील गतिविधियों में कुछ इस प्रकार थीं : छाल और पत्तों की रगड़ से काग़ज़ पर छाप, बीजों का संग्रह, फूलों को दबाकर उनकी छाप, अण्डाशय को देखने के लिए फूलों का विच्छेदन आदि। कोई अनुसन्धान करने से पहले, जैसे कि कली से फूल और फल का चक्र, हम जीवन–चक्र की 'परिकल्पनाओं के चित्र' (hypotheses drawings) बनाते थे (जो अपनी स्वयं की व्याख्याएँ थीं)। प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद करने के लिए इस वर्ष प्रकृति की गतिविधियों में नाटक/ लघु नाटिकाओं ने भी भूमिका निभाई।

क़ुदरती जिज्ञासा को आगे बढ़ाना

जूनियर स्कूल में प्रदर्शन के लिए एक 'नेचर टेबल' रखी थी, जिस पर साल भर में बच्चों द्वारा बटोरी गई वे चीज़ें थीं जिन्हें वे प्रदर्शित करना चाहते थे, साथ ही विषय से जुड़ी क़िताबें थीं और एक बड़ा पोस्टर था जिस पर लिखा था, 'Curious Naturalists Ask' (पूछते हैं जिज्ञासु प्रकृतिवादी), जिसके नीचे उनके ढेर सारे सवाल थे। यहाँ शिक्षकों के जर्नलों से कुछ अंश दिए गए हैं, जो हमारे द्वारा की गई गतिविधियों से सम्बन्धित हैं।

29 जून : हमने पत्तियों को देखते हुए अक्षरबद्ध (acrostic — किसी शब्द के प्रत्येक अक्षर से शुरू होने वाले शब्द) कविताएँ लिखीं। यहाँ शब्द LEAF (पत्ता) था। फिर हमने पत्तों का वज़न किया और सूखे पत्तों व ताज़ी पत्तियों के वज़न की तुलना की, तो दोनों में कोई अन्तर नहीं था या बहुत कम था। हमने जूनियर स्कूल की बालकनी से सूखे और ताज़े पत्तों को गिराया और पत्तियों के अलग-अलग तरह से ज़मीन पर गिरने के बारे में जो देखा उस पर बात की।

13 जुलाई : हमने इस प्रकृति यात्रा सत्र की शुरुआत *अस्बॉर्न बुक ऑफ़ ट्रीज़* पर एक नज़र डालते हुए की। फूल क्या है? हमने हाल ही में खाए फलों और उनके बीज कैसे दिखते थे, इसके बारे में बात की। जब बच्चों ने अमरूद खाने का ज़िक्र किया तो हमने गेस्ट हाउस जाने का फ़ैसला लिया, जहाँ अमरूद के कई पेड़ हैं। वहाँ हमें कलियाँ, फूल और अमरूद देखने को मिले और हमने उनके रेखाचित्र (sketch) बनाए। उस दिन सुबह का नाश्ता अमरूद रहे।

सत्र- 2 (सितम्बर से नवम्बर)

दिनांक	गतिविधियाँ	वास्तव में क्या हुआ और सुझाव
14/9	सब्ज़ी वाले भूखण्डों में, बीज रखने की जाली में 'अवरेकई' के बीज बोना। बिजूका मन्थन (scarecrow brainstorm)।	हमने चौलाई को निकाला, जो अच्छी तरह से नहीं बढ़ी थी और एक ग्रिड आकार में 'अवरेकई' के बीज बोए। हमने स्कूल के पास के खेतों में खड़े रहने वाले बिजूकों के बारे में बात की और पता लगाया कि उन्हें बनाने के लिए किस सामग्री का इस्तेमाल किया गया था। इसके बाद, प्रत्येक बच्चे ने बिजूका का एक चित्र बनाया और उसमें इस्तेमाल होने वाली सामग्री को चिह्नित किया। हमने इसे बनाने के लिए सस्ती और आसानी से मिल सकने वाली सामग्री पर चर्चा की।
28/9	लेखाचित्रण (graphing) : भूखण्डों में उगाई जाने वाली सब्ज़ियों के दण्ड–आरेख (bar graph)।	लेखाचित्रों (ग्राफ़) पर एक क़िताब साझा की और बताया कि कैसे ग्राफ़ जानकारी को अलग तरीक़े से दिखाते हैं। स्वयं के दण्ड–आरेख बनाने पर बात की। बच्चों ने अपने पसन्दीदा रंग, फल, आकार आदि दिखाना पसन्द किया।
12/10	लेखाचित्रण जारी रखना। प्रकृति से ऐसी चीज़ें एकत्र करना, जिनका वज़न 1 किलोग्राम हो और उन्हें प्रदर्शित करना।	
14/10	डोरी लेकर, उसके ज़रिए शिकारियों व शिकार का जाल बनाने का एक समूह-खेल खेलना और उनके सम्बन्धों को देखना।	शिकारियों व शिकार और उनके इस परिसर के पर्यावरण से सम्बन्ध के बारे में बात की और फिर बच्चों के बीच डोरी से एक जाल बनाने वाला खेल खेला। अन्त में, हमने दिखाया कि शिकार ग़ायब होते जाने या शिकारी कम हो जाने से एक-दूसरे पर निर्भर यह जाल कैसे प्रभावित होता है।
2/11	1 किलो वस्तुओं का प्रदर्शन पूरा करना। समूह का दण्ड–आरेख पूरा करना।	बच्चे दो-दो के जोड़ों में पत्थर, सूखे पत्ते और गुलमोहर के बीज की फलियाँ जैसी चीज़ें खोजने गए, जिनका वज़न 1 किलोग्राम होगा। हमने उस सामग्री को बैगों में भरकर जूनियर स्कूल में प्रदर्शित किया और इस सवाल का पोस्टर लगाकर पूछा, "इन सभी वस्तुओं का वज़न एक जैसा है। क्या आप अन्दर देखे बिना अनुमान लगा सकते हैं कि हरेक बैग में क्या है?"

सत्र- 3 (जनवरी से मार्च)

दिनांक	गतिविधियाँ	वास्तव में क्या हुआ
18/1	जंगल के लिए नुस्ख़ा (Recipe for a Forest)।	हमने इस पर चर्चा की कि जंगल क्या हैं और उनमें कौन-से जीव रहते हैं। फिर भूरे रंग के काग़ज़ की एक बड़ी शीट पर हमने पेड़, पौधे, जीव और पानी की जगहों के साथ एक जंगल का दृश्य बनाया। बच्चों ने अपने जंगल को भरने के लिए काग़ज़, धागे, ओरिगामी पद्धति से बनाए काग़ज़ के जानवरों, बाहर से लेकर आए असली तिनकों एवं पत्तियों का इस्तेमाल किया और रेखाचित्र बनाए।
8/2	क़िताब के पन्नों पर चिड़ियों के रेखाचित्र बनाना जारी रखा।	जिन पक्षियों के बारे में हमने लिखा और रेखाचित्र बनाए, वे परिसर में पक्षियों के अवलोकन के हमारे चार्ट से थे : टिटहरी (Red-wattled Lapwing), सिपाही बुलबुल (Red-whiskered Bulbul), शकरख़ोरा (Purple-rumped Sunbird), मवेशी बगुला (Cattle Egret), कपासी चील (Black-shouldered Kite), कालकलाची/ कोतवाल (Drongo), कलसिरी बुलबुल/ गुलदुम (Red-vented Bulbul), जंगली कौआ (Large-billed Crow), ब्राह्मणी चील (White–headed Kite)।

15 जुलाई : कुछ हफ़्ते पहले, जब हम अपनी सब्ज़ियों वाली ज़मीनों को देख रहे थे और बीजों और बढ़ते पौधों के बारे में बात कर रहे थे, तब आनन्द ने यह सवाल पूछा था : "पृथ्वी पर सबसे पहले पौधे कौन-से थे?" इसलिए, इस दिन के सत्र में हमने एक ऐसी शिक्षक को बुलाया, जो हमें परिसर में कुछ प्राचीन पौधों को दिखाने वाली थीं : काई (mosses), पर्णांग (ferns) और यकृत जैसे दिखने वाले लिवरवर्ट्स (liverworts)। जैसे ही उन्होंने जीवविज्ञान प्रयोगशाला के पास हमें ये पौधे दिखाए, बच्चों ने नए सवाल उठा दिए : "पृथ्वी की शुरुआत कैसे हुई? इन्सान सबसे पहले कब पैदा हुआ?"

हमने काई को आवर्धक शीशों (magnifying glasses) से देखा और कुछ बच्चों ने पाया कि काई तो पत्तियों वाले छोटे पौधों की तरह दिखती है। उस सत्र के बाद से बच्चों ने काई और पर्णांगों को केवल प्रकृति सत्रों में ही नहीं, बल्कि दिन में कई बार और परिसर में कई अन्य स्थानों पर देखा है।

29 जुलाई : चूँकि हम क़ुदरती चक्रों को देख रहे हैं, तो हमने अरविन्द गुप्ता की *साइकिल ऑफ़ लाइफ़* से कुछ हस्तकला का काम किया। इसमें बीजों के साथ एक फली दिखाई गई, किसी को बीज बोते हुए दिखाया, जड़ें और अंकुर दिखाए, पत्ते और फूल दिखाए और फिर नई फलियाँ और बीज दिखाकर जीवन–चक्र को पूरा होते दर्शाया गया।

दूसरे सत्र की ओर बढ़ते हुए, यहाँ उन तीन शिक्षकों द्वारा बनाई गई योजना के अंश दिए गए हैं जो प्रकृति–यात्रा कक्षाओं के सुगमकर्ता थे।

हमारा मानना है कि प्रकृति की सैर के अनुभव के माध्यम से हमने जो कुछ आत्मसात किया उससे हमें यह बोध हुआ कि हमारे अपने अस्तित्व और हमारी चेतना से परे एक विस्तार है। इस एहसास ने बच्चों को भी छुआ है, ऐसी हमें उम्मीद है। रस्किन बॉण्ड के शब्दों में : "ये नन्हे चमत्कार ख़ासतौर पर हमारे लिए नहीं होते हैं। सूरज की रोशनी पत्तियों से छनती आएगी, ओस की बूँदें किसी जाले पर ठहर जाएँगी, पक्षी गाएँगे और एक पहाड़ी जलधारा बुलबुलाती और कलकल करती हुई तब भी बहेगी जब कोई देखने या सुनने वाला न हो। हमारे बस में इतना ही है कि हम वहाँ हों। वहाँ हों, चाहे जहाँ भी हम हों।"

आभार : लेखक इन प्रकृति मॉड्यूलों के दौरान उनकी सहयोगी रहीं रूपा सुरेश और नागिनी प्रसाद द्वारा दिए गए इनपुट के लिए उनका आभार प्रकट करना चाहती हैं।

कीर्ति मुकुन्दा बेंगलूरु के पश्चिम में मगदी के पास स्थित सेंटर फ़ॉर लर्निंग स्कूल में रहती हैं और पढ़ाती हैं। वे मुख्य रूप से अँग्रेज़ी भाषा की कक्षाओं एवं कुछ सामाजिक विज्ञान परियोजनाओं से जुड़ी हुई हैं और उन्होंने परिसर की सैर एवं प्राकृतिक प्रक्रियाओं में आनन्द लेना शुरू किया है। उनसे keerthi.mukunda@centreforlearning.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : हिमालय तहसीन **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय